1 दिमागी लड़ाई

एक दिन बगदाद के सुलतान के दरबार में पड़ोसी सुलतान का दूत आया।
यह तो पड़ोसी सुलतान का दूत है।
क्यों आया है यह?
मैं क्या जानूँ? उसने मुझे कुछ बताया तो नहीं!
इतने में दूत ने अपनी जेब से खड़िया का एक टुकड़ा निकाला...
...चुपचाप सुलतान के तख़्त के चारों ओर एक गोल लकीर खींच दी।
...और चलता बना।

उसने ऐसा क्यों किया भला?
पता नहीं, सुलतान पर कोई टोना-टोटका किया हो, या फिर सल्तनत पर।
अगर उसके सुलतान ने जादू-वादू करवाया है तब तो हम गए काम से।
सुलतान ने अकलमंद दरबारियों से सलाह-मशविरा किया, उन्होंने उस घेरे का बारीकी से निरीक्षण किया।
इस ओर से लकीर कुछ टेढ़ी दिखती है।
असल मुद्दा यह नहीं है! इस घेरे का मतलब क्या है, यह समझाओ।
दरबारी काफ़ी देर तक आपस में विचार-विमर्श करते रहे।
अंत में–
बादशाह सलामत, बहुत मगजपच्ची करने के बाद भी हम इस घेरे का मतलब समझ नहीं पा रहे हैं।
ओफ्फो! मैं बरबाद हो गया। ऐ खुदा, किन बेवकूफ़ों से पाला पड़ा है!
अचानक एक दरबारी को ख्याल आया। बादशाह सलामत, होजा को क्यों नहीं बुलवा लेते? इस पहेली को सुलझाना उनके ही बस का काम है।
वाह, क्या सुझाया है! होजा तो मेरी सल्तनत का सबसे सयाना आदमी है। ताज्जुब है, मुझे अभी तक उसका ख्याल ही नहीं आया!

होजा को बुलवाओ।
हाँ-हाँ! जल्दी से बुलवाओ।
ज़ोरों से होजा की पुकार मची... तेज़ दौड़नेवाले हरकारे उसकी खोज में दौड़ाए गए।
अहा! होजा (उफ़...उफ़) तुम्हें फ़ौरन सुलतान के दरबार में हाज़िर होना है।
क्यों भाई, क्या हो गया आखिर?
होजा को हरकारे ने पूरा मामला बताया।
...और इस पहेली को बूझने वाले को सुलतान इनाम भी देंगे।
इनाम...मैं चलता हूँ। पर कुछ सामान साथ में लेने पड़ेंगे।
होजा ने बच्चों के खेलने के कुछ छोटे-छोटे खिलौने और एक पालतू चूज़ा साथ में लिए। ...और चल पड़ा महल की ओर।
आओ होजा, आओ। मैं तो बड़ा परेशान हूँ।
ठहरो...ठहरो।
हुँ ऽऽ...
या अल्लाह! वह दूत फिर आ धमका।
उसे मेरे पास आने दीजिए।

चावल...वाह! अब तो इसका हमेशा के लिए फ़ैसला करना होगा।
आऽऽऽ
होजा, उसकी तो तुमने छुट्टी कर दी।
भई, मज़ा आ गया!
हा-हा-हा देखो कैसा भागा!
हा-हा-हा-हम जीत गए। देखो कैसे दुम दबाकर भागा—डरपोक कुत्ते की तरह। हा-हा!
होजा, उसकी तो तुमने छुट्टी कर दी पर आखिर यह माजरा क्या था? मेरी समझ के बाहर है।
सीधी-सी बात है...
...वह आपको जता रहा था कि उसका सुलतान आप पर चढ़ाई करेगा और राजधानी को चारों ओर से घेर लेगा।

...यह था आपके तख़्त के चारों ओर लकीर खींचने का मतलब।
ओह! अब समझा? पर तुमने उसके पैर पर बच्चों का खिलौना क्यों फेंका?
उसे यह समझाने के लिए कि हम उनसे ज़्यादा ताकतवर हैं।
सीधे-लफ़्ज़ों में मेरा मतलब था कि तुम हमारे सामने निरे बच्चे हो, तुम्हारा भला इसी में है कि अपने घर में रहो और खिलौनों से खेलो!
हा-हा-हा!
इस पर हमें दिखाने के लिए कि उसके सुलतान के पास बेशुमार फ़ौजी हैं, उसने ज़मीन पर चावल के दाने फेंके।
मैंने चावल चुगने के लिए चूज़े को छोड़ दिया, जिसका मतलब था...अगर तुमने सचमुच हमारे साथ लड़ाई छेड़ी तो तुम्हारा एक भी सिपाही ज़िंदा नहीं बचेगा।
ही-ही-ही सचमुच! तुमने तो कमाल कर दिया!

अनुवादक–शशी राठी

(नसीरूद्दीन होजा की कहानी पर आधारित)

अभ्यास

पाठ में से

1. होजा ने चलते समय अपने साथ क्या-क्या सामान लिया?
2. बादशाह होजा को क्या बनाना चाहता था और क्यों?
3. होजा ने बादशाह के प्रस्ताव को क्यों ठुकरा दिया?
4. चित्रकथा के अनुसार नीचे दिए गए कामों का क्या मतलब है, लिखिए–

   (क) तख़्त के चारों ओर घेरा लगाना।

   (ख) चावल के दाने फेंकना।

   (ग) चूज़े द्वारा चावल के दाने चुग लेना।

5. **उचित उत्तर पर सही (✔) का निशान लगाइए–**

   (क) पड़ोसी सुलतान के दूत ने अपनी जेब में से क्या निकालकर सुलतान के तख़्त के चारों ओर गोल लकीर खींच दी?

   ☐ पैन ☐ खड़िया ☐ कलम

   (ख) घेरे की पहेली सुलझाने के लिए किसे बुलाया गया?

   ☐ हरकारा ☐ दूत ☐ होजा

बातचीत के लिए

1. कोई ऐसी घटना बताइए जब आपने अपनी चतुराई से किसी समस्या को हल किया हो।
2. होजा की तरह अपनी चतुराई तथा बुद्धिमानी के लिए और कौन-कौन से व्यक्ति प्रसिद्ध हैं, चर्चा कीजिए।
3. इनमें से किसी एक प्रसिद्ध व्यक्ति की चतुराई का कोई एक किस्सा सुनाइए।

अनुमान और कल्पना

1. अगर होजा नहीं होता तो क्या होता?
2. दूत ने वापस जाकर राजा को क्या बताया होगा?

आपके अनुभव व आपकी बात

1. **होजा आराम करने में मशगूल या व्यस्त रहता था। आप दिनभर किन-किन कामों में मशगूल रहते हैं? किन्हीं पाँच कामों को नीचे दी गई तालिका में लिखिए–**

कामों में मशगूल	
(क)	....
(ख)	....
(ग)	....
(घ)	....
(ङ)	....

2. आपने ऊपर जो काम लिखें हैं, उनमें से आपको किस काम में मशगूल रहना बेहद पसंद है और क्यों?
3. जिस काम में आपको मशगूल रहना पसंद नहीं है, क्या आप उनसे बचने के लिए कोई कोशिश करते हैं? कैसे?

भाषा की बात

1. **पाठ में आए दस संज्ञा शब्द ढूँढकर शब्दकोश के क्रमानुसार लिखिए–**

....	....	....	....	....
....	....	....	....	....

2. आया, बताया, गए, आदि काम वाले शब्द हैं जिन्हें हम 'क्रिया' कहते हैं। नीचे दिए गए रिक्त स्थान उचित क्रिया शब्द छाँटकर भरिए–

(क) अध्यापिका ने हमें .... कि मन लगाकर पढ़ाई करो। (समझाया/समझाओ)

(ख) राकेश बाज़ार से सामान लेने ....। (गए/गया)

(ग) नेहा ने अपनी माँ को सब सच-सच ....। (बताया/बताई)

(घ) राहुल दौड़ प्रतियोगिता में बहुत तेज़ ....। (भागी/भागा)

(ङ) रेखा ने सारे सवालों का सही जवाब ....। (दिया/किया)

(च) मैंने एक सपना ....। (बनाया/देखा)

3. 'जादू-वादू' की तरह शब्द-युग्मों पर घेरा लगाइए–

घर-घर	चाय-वाय	चाय-नाश्ता
नदी-वदी	घास-फूस	पापड़-वापड़

4. 'होजा' एक व्यक्ति का नाम है। यदि इसके अक्षरों को अलग करेंगे तो बनेगा– 'हो जा।' जैसे–अब तैयार हो जा।

नीचे दिए गए शब्दों के अक्षरों को अलग करके शब्द बनाइए–

(क) कालका ....

(ख) आना ....

(ग) बादशाह ....

5. पाठ में इनका क्या मतलब है, लिखिए–

(क) चलता बना। ....

(ख) माजरा क्या है? ....

(ग) जताना चाहता है। ....

जीवन मूल्य

होजा सल्तनत का सबसे सयाना आदमी है। उसने अपनी समझदारी और बुद्धिमानी से सल्तनत पर आई मुश्किल परिस्थिति को बदल दिया।

- हमें भी कठिन परिस्थिति में समझदारी और बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए, क्यों?

कुछ करने के लिए

1. चावल एक तरह का अनाज है जिसे कई तरह से इस्तेमाल किया जाता है। इसकी खिचड़ी, पुलाव, खीर, आदि बनाकर खाई जाती है। अपने घर में और स्कूल में बातचीत करके कुछ और अनाजों के नाम पता कीजिए–

............चावल............	............जौ............	....
....	....	....

2. नीचे दिए गए चित्रों को देखकर आपके दिमाग में उनसे जुड़े हुए जो-जो से शब्द आते हैं, उन्हें दिए गए स्थान में लिखिए–

खिलौना

चूज़ा

सुलतान

2 लौह पुरुष

"काका मैं आगे पढ़ना चाहता हूँ," बालक के स्वर में **दृढ़ता** थी। पिता ने क्षण भर उसकी ओर देखकर कहा, "यदि तुम शहर चले जाओगे तो खेत के काम-काज में मेरा हाथ कौन बँटाएगा?"

पिता के उत्तर से बालक उदास हो गया। उसने साहस बटोरकर कहा, "मैं छुट्टियों में घर आकर खेत का काम-काज देख लिया करूँगा।"

"नहीं-नहीं, तुम्हारे दोनों भाइयों–सोमा और नरसी–से मुझे बहुत आशाएँ हैं। छोटे काशी को भी मैं पढ़ाना चाहता हूँ। बड़ा विट्ठल मुंबई में पढ़ रहा है," पिता ने समझाते हुए कहा।

पिता का उत्तर सुनकर बालक ने कहा, "मैं आपका आज्ञाकारी पुत्र हूँ। मैं पढ़-लिखकर कुछ बनना चाहता हूँ। कोई भी बाधा मुझे आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती। कृपया आप मुझे पढ़ने की **अनुमति** दे दीजिए।" बालक का स्वर और विचार सुनकर पिता ने सिर हिलाकर उसे आगे पढ़ने की अनुमति दे दी।

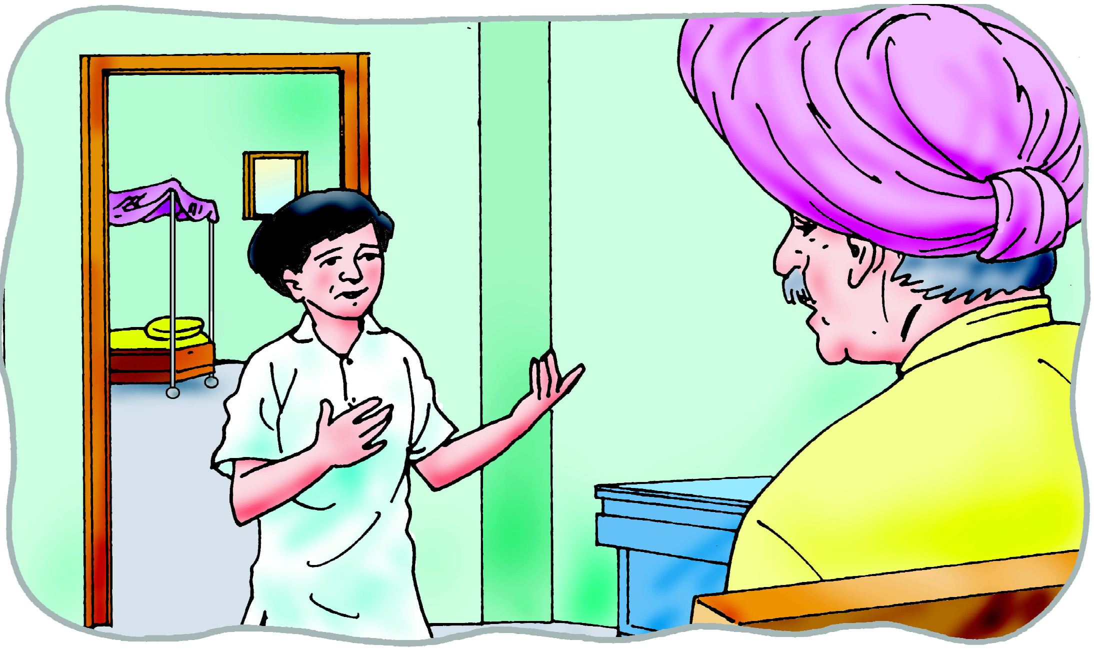

दृढ़तापूर्वक अपनी बात पिता के सामने रखने वाला यह बालक वल्लभ था। वल्लभ ही बड़ा

शब्दार्थः दृढ़ता–मज़बूती, **अनुमति**–स्वीकृति, इजाज़त

होकर सरदार वल्लभ भाई पटेल के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बचपन की यह दृढ़ता उनमें **आजीवन** बनी रही। इसलिए देश उन्हें 'लौह पुरुष' के नाम से याद करता है।

वल्लभ भाई पटेल ने 1879 में नदियाड़, गुजरात से दसवीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण की। दसवीं तक आते-आते वल्लभ ने अपने आने वाले जीवन के विषय में निर्णय ले लिया था। जान चुका था कि जो इंग्लैंड से कानून की पढ़ाई कर के भारत आते हैं, उन्हें धन और यश दोनों मिलते हैं। इंग्लैंड जाकर कानून की पढ़ाई करना ही वल्लभ भाई के जीवन का उद्देश्य बन गया। उसने रात-दिन कठोर परिश्रम शुरू कर दिया। वल्लभ भाई ने मुख्तारी की परीक्षा उत्तीर्ण कर के नदियाड़ न्यायालय में वकालत शुरू कर दी। कानून की बारीकियों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के कारण उनकी गिनती प्रसिद्ध वकीलों में होने लगी। वह इंग्लैंड जाने के लिए पैसे जोड़ते रहे। वह दिन आया जब उन्होंने इंग्लैंड जाने की समूची कार्रवाई पूरी कर ली। वह यात्रा संबंधी आदेश की प्रतीक्षा करने लगे। वर्षों का सपना पूरा होने वाला है, यह सोच-सोचकर वल्लभ भाई मन ही मन प्रसन्न होते। "वल्लभ, वल्लभ कहाँ हो, देखो किसी अज्ञात **हितैषी** ने मेरा इंग्लैंड जाने का टिकट भेजा है," चिल्लाता हुआ उनका बड़ा भाई विट्ठल उनके पास आया।

"यह मेरा टिकट है, तुम्हारा नहीं," कहते हुए वल्लभ भाई ने अपने बड़े भाई के हाथ से लिफ़ाफ़ा ले लिया।

लिफ़ाफ़े पर अंग्रेज़ी में लिखा था-वी.जे. पटेल, वकील, बोरसद। वल्लभ भाई समझ गए यह

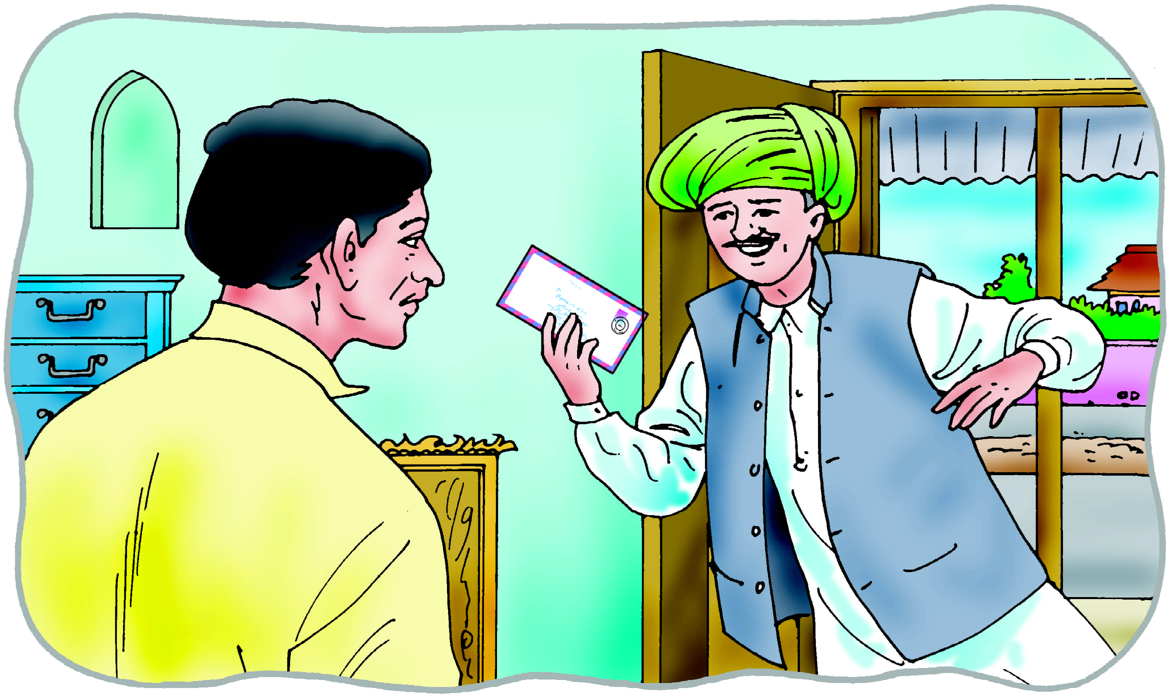

शब्दार्थः आजीवन-जीवन भर, **हितैषी**-भला चाहने वाला

लिफ़ाफ़ा उनके भाई के पास कैसे पहुँचा! विट्ठल भाई भी अंग्रेजी में यही नाम और पता लिखते थे।

वल्लभ भाई ने अपने भाई को जब पूरी बात बताई तो उनका मुँह लटक गया। कुछ देर बाद विट्ठल भाई ने कहा, ''मैं बड़ा हूँ, मुझे पहले जाने दो। मेरे आने के बाद तुम चले जाना।''

वल्लभ भाई कुछ देर सोचते रहे और फिर कहा, ''यह टिकट आप ले लीजिए। आपके ही नाम है।'' छोटे भाई की बात सुनकर विट्ठल भाई की आँखों से आँसू बहने लगे। वल्लभ ने अपना टिकट विट्ठल भाई को दे दिया। अपनी सज्जनता से वल्लभ भाई ने सब का दिल जीत लिया।

कुछ समय बाद वल्लभ भाई भी कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए। 1913 में वह पढ़ाई पूरी करने के बाद भारत लौट आए। उन्होंने अहमदाबाद में वकालत प्रारंभ की। थोड़े दिनों बाद ही उनकी वकालत चमक उठी। वल्लभ भाई ने सुख-सुविधाओं से भरपूर जीवन जीना प्रारंभ कर दिया। उन्हीं दिनों गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका से लौट आए थे। उन्होंने चंपारन, बिहार में नील की खेती करने वाले किसानों पर होने वाले अत्याचारों के विरोध में **सत्याग्रह** प्रारंभ कर दिया। वल्लभ भाई गाँधी जी के सत्य, अहिंसा के सिद्धांतों से बहुत प्रभावित हुए। वह वकालत, घर-परिवार सब कुछ छोड़कर स्वतंत्रता **संग्राम** में कूद पड़े। उनके नेतृत्व में गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों ने संघर्ष कर के, अंग्रेज़ी साम्राज्य की ईंट से ईंट बजा दी। गाँधी जी ने वल्लभ भाई को 'सरदार' की उपाधि दी। कुछ ही समय में सारा देश उन्हें 'सरदार पटेल' के नाम से जानने लगा।

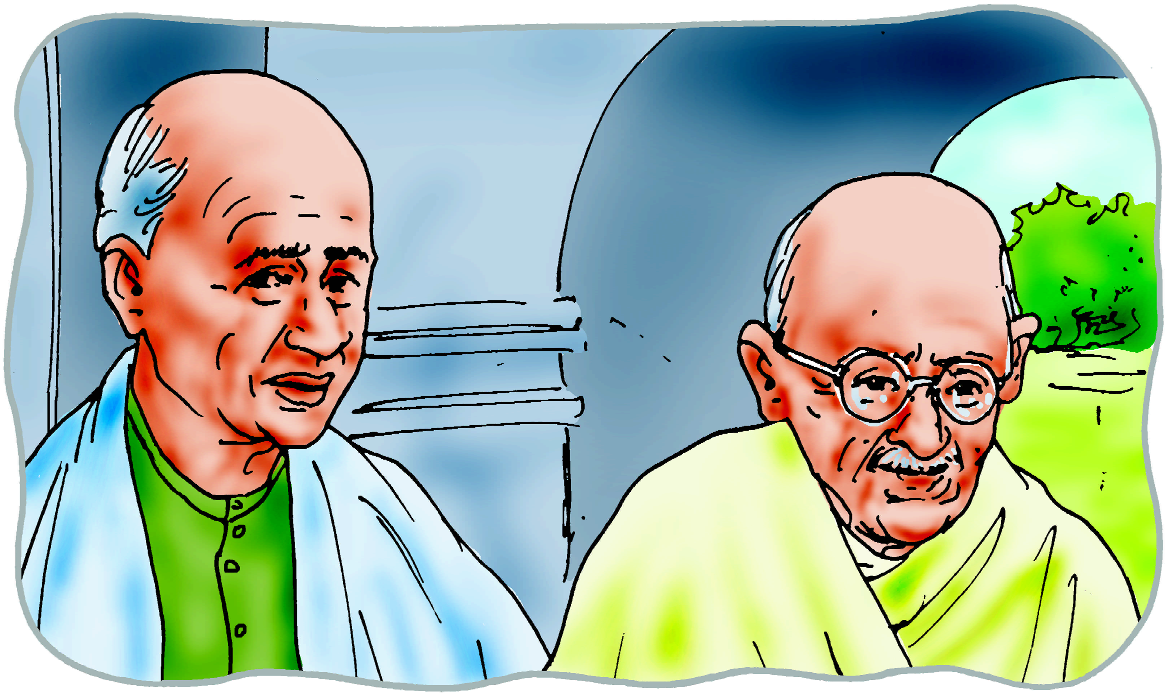

शब्दार्थः सत्याग्रह–सत्य के लिए आग्रह, **संग्राम**–युद्ध, लड़ाई

अपने त्याग, परिश्रम, दृढ़ता और संघर्ष से वे स्वतंत्रता संग्राम के मुख्य नेता बन गए तथा जवाहर लाल नेहरू, मौलाना आज़ाद और महात्मा गाँधी के सबसे निकट सहयोगी माने जाने लगे। 1942 का वर्ष आ गया। 'अंग्रेज़ों भारत छोड़ो' का नारा देश के कोने-कोने में गूँजने लगा। सरदार पटेल ने अहमदाबाद में एक सभा में भाषण देते हुए कहा, "अगर कल सब नेता बंदी बना लिए जाएँ तब भी स्वतंत्रता संग्राम जारी रखना। मर जाना पर आगे बढ़ाया हुआ कदम पीछे नहीं हटाना।" सरदार पटेल की इस **ओजस्वी** वाणी से प्रेरित होकर जनता ने अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध **विद्रोह** कर दिया।

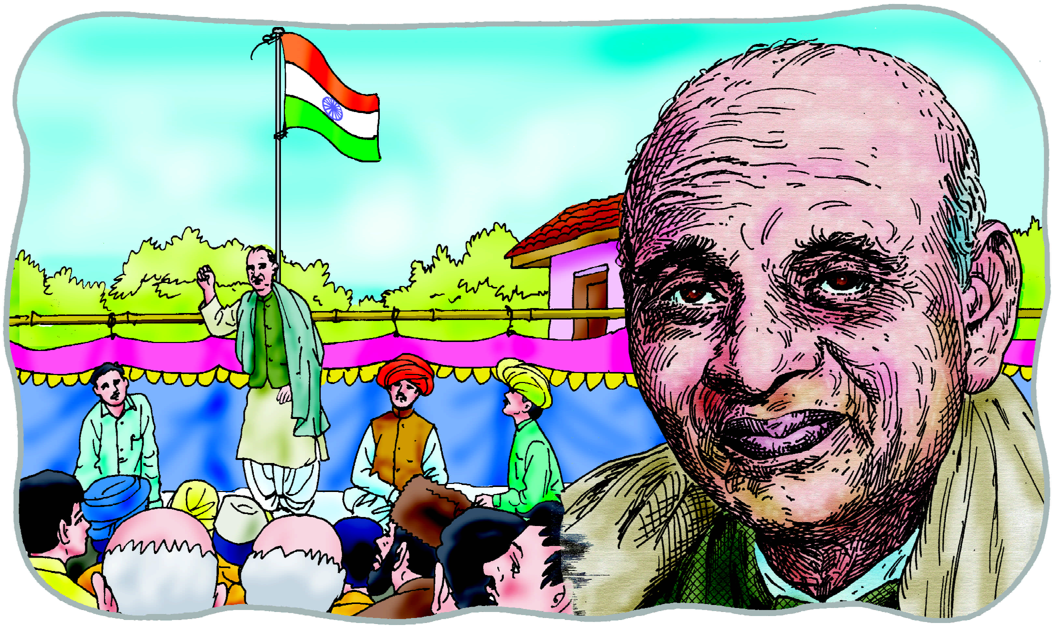

सरदार पटेल का जीवन त्याग और दृढ़ता की अद्भुत कहानी है। देश के अधिकांश राज्यों की कांग्रेस समितियाँ सरदार पटेल को स्वतंत्र भारत का प्रथम प्रधानमंत्री बनाना चाहती थी। गाँधी जी जवाहर लाल नेहरू के पक्षधर थे। सरदार पटेल ने देश के हित में गाँधी जी की बात मान ली। 15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता के साथ-साथ धर्म के नाम पर देश का बँटवारा हुआ। बँटवारे के साथ ही अंग्रेज़ों ने भारतीय रियासतों को भी स्वतंत्र कर दिया। इन रियासतों की संख्या 562 थी। इनमें से कुछ पाकिस्तान में विलय चाहती थीं, कुछ भारत में तथा कुछ स्वतंत्र रहना चाहती थीं। इस समस्या के समाधान की ज़िम्मेदारी सरदार पटेल को सौंपी गई। उन्होंने प्रेम, दृढ़ता और संकल्प शक्ति से उन रियासतों को भारत में विलय के लिए मना लिया। उनके प्रयासों से एक नए और सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण हुआ। 15 दिसम्बर 1950 को भारत माँ का यह सपूत चिर निद्रा में सो गया। उनकी महानता और लौह के समान दृढ़ता के लिए देश उन्हें याद करता है।

शब्दार्थः ओजस्वी–प्रभावशाली, **विद्रोह**–क्रांति

अभ्यास

पाठ में से

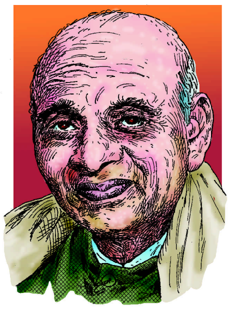

1. वल्लभ भाई को देश किस नाम से याद करता है? क्यों?
2. वल्लभ भाई ने अपने जीवन के विषय में कब निर्णय लिया था?
3. वल्लभ भाई स्वतंत्रता संग्राम से किस प्रकार जुड़े?
4. सरदार पटेल ने अहमदाबाद की सभा में क्या कहा?
5. स्वतंत्र भारत में सरदार पटेल का सबसे बड़ा योगदान क्या था?
6. **नीचे दिए गए कथन किसने, किससे कहे?**

   (क) ''यदि तुम शहर चले जाओगे तो खेत के काम-काज में मेरा हाथ कौन बँटाएगा?''

   (ख) ''मैं पढ़-लिखकर कुछ बनना चाहता हूँ। कोई भी बाधा मुझे आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती।''

   (ग) ''देखो किसी अज्ञात हितैषी ने मेरा इंग्लैंड जाने का टिकट भेजा है।''

   (घ) ''यह टिकट आप ले लीजिए। आपके ही नाम है।''

7. **पाठ के आधार पर ठीक शब्द छाँटकर वाक्य पूरे कीजिए–**

   (क) मैं छुट्टियों में आकर .... का काम-काज देख लिया करूँगा। (खेत/घर)

   (ख) .... की यह दृढ़ता उनमें आजीवन बनी रही। (बचपन/किशोरावस्था)

   (ग) कानून की पढ़ाई करना ही वल्लभ के जीवन का .... बन गया। (उद्देश्य/ध्येय)

   (घ) चिल्लाता हुआ उनका .... भाई विट्ठल उनके पास आया। (छोटा/बड़ा)

   (ङ) वल्लभ भाई ने अपने बड़े भाई के हाथ से .... ले लिया। (टिकट/लिफ़ाफ़ा)

   (च) गाँधी जी ने वल्लभ भाई को .... की उपाधि दी। (सरदार/वीर)

बातचीत के लिए

1. सब बच्चे मिलकर देश की आज़ादी की पूरी कहानी पर चर्चा कीजिए।

2. 'सादा जीवन, उच्च विचार' रखने वाले स्वतंत्रता सेनानियों, संतों व विचारकों के बारे में पता करके कक्षा में बातचीत कीजिए।

अनुमान और कल्पना

1. यदि वल्लभ भाई अपने पिता के काम-काज में हाथ बँटाते तो वे क्या होते?
2. यदि आप वल्लभ भाई की जगह होते तो क्या करने का फ़ैसला लेते और क्यों?

भाषा की बात

1. मुहावरे भाषा को सुंदर बनाते हैं। नीचे दिए मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए।

(क) मुँह लटकाना (ख) ईंट से ईंट बजाना

2. पाठ में आए कोई चार व्यक्तिवाचक और चार जातिवाचक संज्ञा शब्द लिखिए–

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
....	....
....	....
....	....
....	....

3. नीचे कुछ वाक्यों के अंश दिए गए हैं। इनमें रेखांकित शब्दों का लिंग पहचानकर लिखिए–

वाक्य का अंश	लिंग
(क) कानून की <u>पढ़ाई</u>	.................स्त्रीलिंग.................
(ख) अपनी <u>सज्जनता</u>	....
(ग) स्वतंत्रता <u>संग्राम</u>	....
(घ) 'सरदार' की <u>उपाधि</u>	....
(ङ) ओजस्वी <u>वाणी</u>	....

(च) आँखों से <u>आँसू</u> ....

(छ) अद्‌भुत <u>कहानी</u> ....

जीवन मूल्य

स्वतंत्रता सेनानियों के महानायक महात्मा गाँधी ने सत्य व अहिंसा का पालन किया। इसी तरह सरदार वल्लभ भाई पटेल का जीवन त्याग और दृढ़ता की कहानी कहता है।

- हमारे लिए त्याग, दृढ़ता, परिश्रम, संघर्ष, सत्य, अहिंसा–जैसे जीवन मूल्यों को अपनाना ज़रूरी है, क्यों?
- प्रत्येक भारतीय को सच्चा देशभक्त बनकर राष्ट्र की उन्नति के लिए काम करना चाहिए, क्यों?

कुछ करने के लिए

1. पाठ में आया मुहावरा–मुँह लटकाना–'मुँह' शब्द से जुड़ा है। मुँह शब्द से जुड़े अन्य मुहावरे ढूँढकर उन्हें पर्चियों पर लिखकर एक डिब्बे में डालिए। फिर कक्षा में आप डिब्बे में से एक पर्ची उठाकर उसके अनुसार मुहावरे का अभिनय करें और बाकी बच्चे उस मुहावरे को पहचानें।
2. सरदार पटेल के जीवन से जुड़ी घटना ढूँढिए और कक्षा में सुनाइए।
3. सरदार पटेल की तरह किसी अन्य स्वतंत्रता सेनानी के जीवन के बारे में जानकारी इकट्ठी करके लिखिए व उनका चित्र भी चिपकाइए।